International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-3 May-June-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सैंधव सभ्यता में मनोरंजन के साधन : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ नीरज रूवाली डी.लिट्
इतिहास विभाग
एम.बी.पी.जी.कॉलेज हल्द्वानी (नैनीताल)

निर्मला बिष्ट
शोधार्थी
एम.बी.पी.जी.कॉलेज हल्द्वानी (नैनीताल)

मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही 'मनोरंजन' मनुष्य के दैनिक जीवन के संघर्ष से उत्पन्न थकान एवं नीरसता को दूर कर जीवन में प्रफुल्लता एवम् नवीन ऊर्जा का संचार करने सहायक रहा है। सैंधव सभ्यता से हमें भारतीय इतिहास में मानव जीवन के क्रियाकलापों का सुस्पष्ट ज्ञान प्राप्त होना प्रारम्भ होता है। सैंधव सभ्यता के विभिन्न स्थलों के उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक स्रोत यह प्रदर्शित करते हैं कि तद्समय व्यक्तियों द्वारा मनोरंजन एवं जीवन में आमोद–प्रमोद हेतु विभिन्न साधनों का प्रयोग वृहद पैमाने पर करना प्रारम्भ कर दिया गया था। सैंधव वासियों द्वारा व्यवहृत मनोरंजन के साधन, जैसे नृत्य, पासों के खेल, संगीत, पशु–दौड़, आखेट इत्यादि क्रमशः समय यात्रा करते हुए वर्तमान काल में मानव जीवन के मनोरंजन का महत्वपूर्ण भाग बन गये हैं।

तद्समय प्रचलित मनोरंजन के प्रमुख साधन निम्नवत् वर्णित किये जा सकते हैं :–

1. **नृत्य** – नृत्य सैंधव वासियों के मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन था। सैंधव सभ्यता के विभिन्न स्थलों से बड़ी संख्या में नर्तकियों की चूने, पत्थर, काँसे की प्राप्त मुद्राओं एवं मूर्तियों से इस तथ्य की पुष्टि होती है। मोहनजोदड़ो के 'HR'[1] क्षेत्र से अर्नेस्ट मैके द्वारा सन् 1926 में उत्खनन के दौरान नर्तकी की 4.5 इंच ऊँचाई की काँसे की कलात्मक प्रतिमा प्राप्त हुई है। उक्त प्रतिमा टखनों से नीचे खण्डित है। बाँयी भुजा में काँधे से कलाई तक 24–25 चूड़ियाँ हैं, वहीं दाहिने हाथ में 4 चूड़ियाँ पहने हुए है। बाँये हाथ में कोई वस्तु पकड़ी है, जो उसकी जाँघ पर टिकी है। यह सम्पूर्ण प्रतिमा नृत्यरत अवस्था में है। प्रतिमा का सिर एक ओर को नृत्य की मुद्रा में झुका हुआ है तथा नर्तकी के बाल एक वेणी में आबद्ध कर दाहिने कँधे पर खुले छोड़ दिये हैं। गले में कण्ठाभरण पहने है। सम्पूर्ण देहयष्टि अत्यन्त सुडौल व पतली–दुबली है। हाथ असामान्य रूप से लम्बे हैं। लम्बी आँखें तथा चपटी नासिका है। सम्भवतः यह मूर्ति किसी बलूच महिला से प्रेरित है। चूंकि यह सतह से 6 फीट 4 इंच नीचे से किसी घर से उत्खनित की गयी है, अतः न तो यह मूर्ति अत्यधिक बाद के काल की है, और न ही बहुत पूर्व हड़प्पा काल की है।[2] मूर्ति का निर्माण द्रवी मोम विधि से हुआ है तथा पर्याप्त स्वाभाविकता लिये हुए है।

इसी के समान किन्तु कुछ कमतर काँसे की एक अन्य नृत्यरत मूर्ति मोहनजोदड़ो के DK-G क्षेत्र में एक घर से प्राप्त हुई है, जो शिल्प कौशल व कला की दृष्टि से अपेक्षाकृत निम्न कोटि की है।

हरियाणा के फतेहाबाद से एक मिट्टी के टुकड़े पर उत्कीर्णित नर्तकी का भित्ति चित्र मिला है।एक अन्य स्लेटी चूने–पत्थर की नृत्य मुद्रा में बनाई गयी आकृति का धड़ दयाराम साहनी द्वारा किये गये उत्खनन में मिला है। इसमें शरीर के विभिन्न अंगों के अन्तर्गत सिर व भुजाओं को अलग–अलग बनाकर उन्हें पृथक से जोड़ा गया होगा, जो वर्तमान में अप्राप्त है तथा स्थान के द्योतक केवल छेद ही बचे हैं। दाँये पैर पर खड़ी यह आकृति का बाँया पैर, जो आधा खण्डित है, आगे की ओर कुछ उठा हुआ सा है, जो ताल के साथ गति करता हुआ सा प्रतीत होता है। पूरी आकृति में जीवंतता व गतिशीलता है। यह शिव नटराज का पूर्ववत् रूप हो सकता है।[4]

2. **संगीत –** मानव एक संगीत प्रिय प्राणी है। सैंधववासी भी इसका अपवाद नहीं थे। उत्खनन में संगीत से सम्बन्धित उपकरण अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं जिससे संगीत को तद्समय के मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन स्वीकार किया जा सकता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर एक व्यक्ति ढोल जैसी आकृति वाली कोई वस्तु बजा रहा है। एक दूसरी पुरुष मूर्ति के कंधे से भी ढोल के समान कोई वस्तु लटक रही है। स्पष्ट है कि सैंधववासी ढोल जैसे किसी वाद्य यंत्र से परिचित थे। टेराकोटा से बनी हुई एक सीटी, जो खोखली चिड़िया (फाख्ता) के रूप में निर्मित है, जिसके पीछे या किनारे एक छोटा छेद बना हुआ है।[5] यह सीटी फूँक मार कर बजायी जाती होगी। तला छोटा होने के कारण आसानी से पकड़ी व खड़ी की जा सकती है। बच्चे इससे सीटी बजाते होंगे और फाख्ता की आवाज की भी नकल करते होंगे।[6] टेराकोटा के बने हुए ये उपकरण धातु का पवन उपकरण अथवा पोत बाँसुरी के छोटे/लघु रूप हैं। अण्डाकार खोखली सीटियाँ गायक के साथ ताल मिलाने व संगीत की ध्वनि मिलाने के काम आती होगी, जो आज के पाकिस्तान व भारत की परम्पराओं में सम्मिलित है।

चिड़िया के आकार की सीटियाँ बच्चों का मनोरंजन करने के काम आती होंगी।हड़प्पा स्थलों के आसपास के इलाकों में आज भी इस प्रकार के मिलते–जुलते उपकरण प्रचलित हैं।

यद्यपि सैंधव सभ्यता एक बड़ी सभ्यता थी, किन्तु वर्तमान तक उत्खनन में प्राप्त साक्ष्यों से संगीत के विषय में व्यापक जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी है। सम्भवतः वाद्य यंत्रों के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले यंत्रों के सामग्री के शीघ्र नष्ट हो जाने की प्रवृत्ति के कारण पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त होना अत्यन्त कठिन है कि वास्तव में सैंधववासी कौन–कौन से वाद्य यंत्र प्रयुक्त करते थे। केवल टेराकोटा या अन्य ऐसें पदार्थों के साक्ष्य, जो नष्ट नहीं हो सके, से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो पाती है।

4. झुनझुने– मोहनजोदड़ो क्षेत्र से मिट्टी के गोल झुनझुने, जिसके अन्दर मिट्टी की बनी छोटी गोलियाँ डाली गयी हैं, प्राप्त हुई हैं, जो अत्यधिक प्रचलित थे। मोहनजोदड़ो क्षेत्र से प्राप्त एक सर्वाधिक उत्कृष्ट झुनझुना 2.55 इंच व्यास का है एवं हल्के लाल रंग की पकी मिट्टी का है, जिसमें चारों ओर गोलाकार घंटियाँ लाल रंग से बनायी गयी हैं। यह भूमि से बारह फीट नीचे से उत्खनित किया गया है। झुनझुने अलग–अलग आकार के हैं, जिनमें कुछ 1.5 इंच से 2.6 इंच व्यास के हल्के लाल रंग के हैं, कुछ झुनझुने सादे हैं, कुछ मोटी, लाल समानान्तर, क्षैतिज या लम्बवत् रेखाओं से अलंकृत किये गये हैं।[7] सम्भवतः उक्त झुनझुने को एक ज्वलनशील कोट के चारों ओर मिट्टी लपेट कर बनाया जाती होगा, जिसके अन्दर आवास अधिक ध्वनि उत्पन्न करने के लिये मिट्टी की पकी हुई गोलियाँ डाल दी जाती होंगी। एक खोले गये झुनझुने के अन्दर तीन गोलियाँ पाई गई है। सभी झुनझुने अच्छे तरीके से हस्त निर्मित हैं तथा खुदाई के सभी स्तरों पर मिले हैं।

5. पासा – सैंधव सभ्यता में मानव के दैनिक जीवन में प्रचलित मनोरंजन के विभिन्न साधनों में आउटडोर खेलों एवं मनोरंजन के बजाय इंडोर खेलों एवं मनोरंजन के साधनों को अधिक वरीयता दी जाती थी। इनमें पासा सर्वाधिक प्रसिद्ध खेल था। हड़प्पा से प्राप्त पासे घनाकार या वर्तुलाकार हैं, जो मिट्टी से बने हैं एवं संख्या में कुल सात हैं, जिनमें चार मिट्टी के, दो पत्थर के एवं एक काँचली मिट्टी से बने हैं। इन पासों की दो विपरीत सतहों का कुल योग वर्तमान प्रचलित पासों के समान सात ना होते हुए एक के विपरीत सतह पर दो का अंक, तीन के विपरीत सतह पर चार व पांच के विपरीत छः का अंक अंकित है।[8]केवल एक पासे में ही आज की तरह 1–6, 2–5, 3–4 का अंकन प्राप्त होता है।[9]मोहनजोदड़ो में मिट्टी और पत्थर के बने घनाकार पासे मिले हैं। ये पासे आजकल के पासों के समान हैं, जिनका आकार लगभग 1.2 इंच ग 1.2 इंच ग 1.2 इंच से 1.5 इंच ग 1.5 इंच ग 1.5 इंच के मध्य है। तथापि एक आयताकार पासा 1.6 ग 1.4 ग 1.1 इंच का प्राप्त हुआ है।[10] मोहनजोदड़ो के अधिकांश पासों में सभी 6 सतहों पर अंकित छिद्र उभरे हुए हैं।

मोहनजोदड़ों के पासों के परीक्षण उपरान्त यह पाया गया कि इन पासों की कुछ सतहें समतल एवं शेष असमतल है। इन पासों का निर्माण इस चतुराई से किया गया था कि पासा फैंकने पर अधिक अंक वाला हिस्सा ऊपर की ओर आये, जिससे कि पासा फैंकने वाला विजयी हो जाये।[11] इससे इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि जुआ खेलने के लिये खिलाड़ी अपने–अपने पासे लाते थे और पासे इस तरह बनाये जाते थे कि खेलने वाले को विजयी बना दें।

मोहनजोदड़ो के अधिकांश पासों में एक छिद्र वाले पक्ष के विपरीत पक्ष पर दो छिद्र, तीन छिद्र वाले पक्ष के दूसरी ओर चार छिद्र तथा पांच छिद्र वाले पक्ष के दूसरी ओर छः छिद्र अंकित किये गये हैं। इसी प्रकार से छिद्रित ढंग का एक पासा टेप गावरा में भी मिलता है, जो कि उस स्थान के साथ भारतीय सम्पर्क को दर्शाता है।

मोहनजोदड़ो में समान आकार के दो पासे एक दूसरे से कुछ ही दूरी पर मिले हैं, वहीं हड़प्पा में तीन समान आकार के पासे – दो मिट्टी व एक पत्थर के एक दूसरे से काफी दूरी पर मिले हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि सैंधव निवासी खेल में एक दाँव में एक से अधिक पासों का प्रयोग करते थे या नहीं। पासे जोड़ों में प्रयुक्त किये जाते थे।[12] पासे अद्भुत रूप से सुगठित बनाये गये हैं, जिनके किनारे सुस्पष्ट हैं। इन पर किये गये क्रमांक अंकन हेतु छिद्रित बिन्दु का व्यास 0.1 इंच है। पासों का रंग हल्का लाल है, जिनमें कभी कभार लाल कोटिंग भी की गयी है। इनकी मिट्टी भली प्रकार से पकाई हुई है।[13] यह पासे निःसंदेह किसी कोमल/मुलायम सतह पर फैंके जाते होंगे। सम्भवतः कपड़े पर या मिट्टी के मैदान पर, क्योंकि इन पासों के कोने बहुत कम क्षतिग्रस्त हैं।[14] ये सभी पासे उत्खनन में जमीन की सतह के नीचे एक से पन्द्रह फीट की गहराई पर प्राप्त हुए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ये प्रारम्भिक हड़प्पा काल से सम्बन्धित न होकर पष्चातवर्ती हड़प्पा काल से सम्बन्धित हैं।[15] यह सम्भव है कि उपरोक्त पासे बोर्ड पर खेले जाते हों, जैसे कि मि0 वूले को 'उर' में बोर्ड व उसके पासे मिले, किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि क्या ये पासे मोहनजोदड़ो से प्राप्त पासों के समान हैं अथवा भिन्न।[16]

4. खिलौने – आधुनिक युग के ही समान सैंधव सभ्यता के बाल्य व युवा वर्ग विभिन्न प्रकार के खिलौनों के बड़े शौकीन थे। उत्खनन में प्राप्त साक्ष्यों से विदित होता है कि खिलौने अधिकांशतः पकी हुई मिट्टी से बनाये जाते थे। बड़ों के ही

साथ–साथ छोटे बच्चे भी मनोरंजन हेतु मिट्टी के खिलौने बनाते थे। निःसन्देह खिलौने बनाने में लकड़ी का भी उपयोग किया जाता रहा होगा, जिनका मिट्टी में दबकर क्षरण हो गया होगा।[17] यद्यपि उस प्राचीन सभ्यता के बच्चे भी मिट्टी से साधारण खिलौने बनाकर अपना मनोरंजन करते थे[18] तथापि उनके पास कुशल शिल्पकारों द्वारा बनायी गयी भी अनेक खेल सामग्रियां उपलब्ध थीं। मिट्टी के प्राप्त खिलौनों का वर्गीकरण निम्नवत किया जा सकता है–

4.1 मानव आकृतियों के खिलौने – विभिन्न स्थलों से मिट्टी की बनी छोटी–छोटी मानव आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें से कुछ तो धार्मिक महत्व एवं प्रयोजन की हैं तथा कुछ निश्चित रूप से खिलौनों के रूप में प्रयुक्त होती रही होंगी। एक गर्भवती महिला की मृण्मूर्ति, जिसका एक हाथ गतिशील है, उक्त मृण्मूर्ति की ऊँचाई 3.8 इंच है तथा पैर के तले में एक छेद है, जिससे यह प्रतीत होता है कि इसे एक पतली डंडी पर झुलाया जाता होगा।[19] इसी प्रकार बिस्तर पर लेटी एक महिला छोटे बच्चे को स्तनपान करा रही है, जो निश्चित तौर पर एक खिलौना है। खिलौने की कुल लम्बाई बिस्तर सहित 4.1 इंच है, जो अनगढ़ रूप से किसी बच्चे के लिये बनाया गया होगा ।[20] इसी प्रकार के बच्चों द्वारा निर्मित खिलौने भी बहुतायत में प्राप्त होते हैं।

4.2 पशु आकृतियों के खिलौने – सैंधव सभ्यता के विभिन्न स्थलों से मिट्टी से निर्मित भिन्न–भिन्न प्रकार के स्थिर प्रकृति तथा गतिशील खिलौने प्राप्त होते हैं। कुछ भी। पशु आकृतियों में मोहनजोदड़ो के DK क्षेत्र से 4.5 इंच लम्बाई का एक कूबड़दार बैल/ गाय का खिलौना प्राप्त हुआ है, जिसकी बनावट को देखकर यह अनुमान लगाया गया है कि इसके कूबड़ व पीछे के हिस्से में से एक तार डालकर पीछे को खींचने पर खिलौने का सिर पीछे की ओर खींचा जा सकता था, किन्तु इसे धकेल कर आगे नहीं किया जा सकता है। अतः अनुमान लगाया जाता है कि सिर को आगे–पीछे करने के लिये अवश्य ही अधिक किसी दृढ़ सामग्री या तार को प्रयुक्त किया जाता होगा। इस खिलौने का सिर गतिशील रहा होगा जो अप्राप्त है।[21] उत्खनन में इस प्रकार के अनेक खिलौनों की प्राप्ति से इनकी लोकप्रियता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

2186 HR क्षेत्र में उत्खनन से भूमि की सतह के 9 फीट 6 इंच नीचे से खोखले शरीर वाले लाल रंग की मिट्टी निर्मित एक पशु प्रतिमा मिली है, जिसका सिर भेड़ की तरह व शेष शरीर व पूँछ चिड़िया की भाँति है। इसकी कुल लम्बाई 4.5 इंच व है। जानवर के शरीर के दोनों ओर आर–पार 2 विपरीत छिद्र हैं। अनुमान लगाया जाता है कि इसमें पहिये लगाये जाते होंगे या फिर एक डंडी लगाकर खिलौने को आगे पीछे झुलाया जाता रहा होगा। गले में एक छिद्र है, जिससे होकर एक तार डालकर रथ को खींचा जा सकता होगा। इसकी बनावट की सुगढ़ता से स्पष्ट है कि किसी बड़े व कुशल शिल्पकार द्वारा इसको बनाया गया होगा।[23] 3.35 इंच लम्बाई की हल्के लाल रंग की एक अन्य आकृति प्राप्त हुई है जिसकी सिर व टाँगें अप्राप्त हैं, किन्तु एक पूँछ है, जिससे इसके बन्दर की आकृति होने का अनुमान लगाया जाता है। कंधों पर एक–एक छिद्र हैं जिसमें एक खूँटी लगाकर हाथ लटकाये जाते होंगे। आकृति के पीछे की ओर एक छिद्र है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इसे एक डंडी पर स्थिर किया जाता होगा। इसका निर्माण किसी वयस्क द्वारा कतिपय असावधानीपूर्ण ढंग से किया गया है।[23]

कुछ अन्य मानव आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं जो बैठी हुई अथवा घरेलू कामों में, जैसे कि आटा गूँथने इत्यादि में संलग्न हैं, निश्चित रूप से खिलौने ही हैं। कुल प्राप्त टेराकोटा सामग्रियों में से तीन–चौथाई पशुओं सामान्यतः कूबड़दार बैलों व अन्य भैसें व नोंकदार पशु को ही दर्शाती है। इसके अतिरिक्त कुत्ता, भेड़, हाथी, सुअर, बन्दर, गैंड़ा, कछुआ व चिड़िया की आकृतियाँ प्राप्त होती हैं। मानव सिर वाली पशु आकृतियाँ भी प्राप्त होती हैं। इन आकृतियों को अधिकतर हाथ से अनगढ़ रूप से ही बनाया गया है। खाँचे का प्रयोग अपवादस्वरूप ही किया गया है।[24]

4.3 मिट्टी के बने अन्य खिलौने – हड़प्पा व मोहनजोदड़ो से मिट्टी के तराजू मिले हैं। मिट्टी निर्मित तराजू का एक पलड़ा सुरकोटड़ा से मिला है। मिट्टी निर्मित सिल–बट्टे भी प्राप्त हुए हैं, जो खिलौनों के ही रूप में प्रयुक्त किये जाते होंगे। मिट्टी की बनी कुर्सी के छोटे–छोटे मॉडल भी प्राप्त हुए हैं।[25] मिट्टी की बनी हुई 2 अन्य तश्तरियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जिसका निर्माण सम्भवतः बच्चों ने किया होगा। इसके मध्य में छोटे–छोटे अन्य मिट्टी के बर्तन, खिलौने, सेलखड़ी, कोयला मिट्टी व पत्थर से बने हैं, सुमेर, मिश्र व कीट की पद्धति के समान इनको कभी–कभी रंग से सजाया भी गया हैं।[26]

अनगड़ बनावट की 2 खिलौने कुर्सियों के मॉडल प्राप्त हुए हैं। प्रथम 2.25 इंच लम्बाई, 1.5 इंच चौड़ाई व 2.75 इंच ऊँचाई का प्राप्त हुआ है, जिसकी सीट के पीछे आधार देकर मजबूती दी गयी है। हल्के लाल रंग की मिट्टी से निर्मित आंषिक गोलाई लिये हुए द्वितीय मॉडल की लम्बाई 2.5 इंच, चौड़ाई 1.3 इंच तथा ऊँचाई 1.83 इंच है जिसके पीठ भाग पर आधार दिया गया है, है। इनकी बनावट अनुमान लगाया जाता है कि बच्चों के द्वारा इनका निर्माण किया गया है। सम्भवतः इनमें मिट्टी की बनी किसी खिलौना आकृति को बैठाया जाता होगा तथा मोहनजोदड़ो के बच्चे इनसे गुड़िया का खेल खेलते हों।[27]

5. **गोलियाँ** – विभिन्न उत्खनन स्थलों से गोमेद, सना हुआ गोमेद, स्लेट, लाल व सफेद पत्थर से बने हुए, शंख, सेलखड़ी, इत्यादि की बनी गोलियाँ प्राप्त हुई हैं। ये विभिन्न सजावटी गेंद के प्रकार के गोले हैं। एक वर्तुलाकार गोले की माप 1.75 इंच है। यह हाथ से बनाया गया है तथा इसकी सतह के चारों ओर मिट्टी की बनी छोटी–छोटी गोलियाँ चिपकायी गयी हैं, जिन्हें बॉल की सतह में चिपकाने के लिये प्रत्येक छोटी गोली के मध्य में नुकीली चीज से चुभाकर बड़े गोले पर दबाया व चिपकाया गया था, जिससे ये ज्यादा टिकाऊ रह सके। इस बॉल का प्रयोग निश्चित रूप से खेलने के लिये किया जाता रहा होगा।[28] हड़प्पा से 3 अन्य शंख/घोंघे की बनायी गयी गेंदें मिलती हैं, जो निश्चित रूप से खेलने के लिये ही निर्मित की गयी होंगी, क्योंकि इनके मध्य में कोई भी छिद्र नहीं है जिससे कि इन्हें बीड्स के रूप में या पिन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।[29] संगमरमर की गोलियाँ फेंक कर खेलने का भी सैंधव सभ्यता में प्रचलन था।

6. **गोटियाँ** – सैंधव सभ्यता उत्खनन स्थलों में मिट्टी, चीनी मिट्टी, काँचली मिट्टी, शंख, संगमरमर स्लेट, सेलखड़ी, काले संगमरमर व गोमेद की बनी विभिन्न गोटी के समान मिली वस्तुयें से स्पष्ट होता है कि गोटी की सहायता से खेले जाने वाला खेल भी प्रचलित था। अधिकांश गोटियाँ अच्छी तरह निर्मित हैं। ये सम्भवतः खाँचों में बनाई गयी हैं। एक 2 इंच ऊँची व 1. 05 इंच आधार व्यास की गोटी का तला किसी सख्त आधारी पर घिस कर चपटा किया गया है।[30] शंखाकार शंख की 3 वस्तुये एक साथ प्राप्त हुई हैं। ग्रीन स्लेट की बनी एक अन्य गोटी भी मिली है। जिनके घिसे हुए किनारे से यह स्पष्ट होता है कि इन्हें खेल के दौरान कठोर सतह /फलक पर खेला जाता होगा। खेल में आगे बढाने के लिए इन्हें सरका कर खिसकाया जाता होगा।[31]

निम्न वर्ग सिरेमिक की बनी गोटियाँ प्रयुक्त करते थे, जिन्हें घिसकर अनुकूल आकार दिया जाता था। जमीन पर निशान बनाकर या मिट्टी पर चौकोर खाने या छोटे छिद्र (गोले) बनाकर इन गोटियों से खेला जाता था। गोटियों को साथ में रखकर ले जाने से वे किसी भी स्थान पर इस खेल को खेल सकते थे। [32] जिस बोर्ड पर इन गोटियों से खेला जाता था, सम्भवतः वे लकड़ी के होने के कारण नष्ट हो गये होंगे।[33] मि0 वूली द्वारा उर में उत्खनन में सिंधु सभ्यता के समकालीन संदर्भ में लकड़ी के दो बोर्ड प्राप्त किये गये हैं। एक बोर्ड में बीस खाने थे और दूसरे बोर्ड में केवल 12 खाने। इनमें काफी मात्रा में शंख से भराई की गयी थी। चूंकि सैंधव सभ्यता में एक समान आकार व पदार्थ की तीन से अधिक गोटियाँ एक साथ एक ही स्थान से प्राप्त नहीं हो पाईं हैं[34] जिससे अनुमान लगाया जाता है कि इस तरह के खेल में आज के शतरंज खेल की गोटियाँ से कम संख्या में गोटियां प्रयुक्त होती होंगी।[35] मोहनजोदड़ो में तीन भागों में विभाजित एक चौकोर ईंट का टुकड़ा मिला है जिसके सम्बन्ध में यह निष्चित किया गया है कि यह टुकड़ा किसी घर के आंगन में फर्श में जड़ा होगा जिस पर लोग आंगन में ही बैठकर पासे आदि खेलते होंगे।एक बड़ी ईंट पर आड़ी तिरछी रेखायें परस्पर एक दूसरे को काटती हुई चित्रित हैं जिससे ईंट पर कोष्ठ बने हुए हैं संभवतः यह भी बोर्ड का ही एक प्रकार है। [36]

7. **पहिये तथा पहियेदार खिलौना गाड़ी** – सैंधव सभ्यता के अधिकतर स्थलों से प्राप्त पषुओं के टेराकोटा निर्मित खिलौने इस तथ्य को प्रदर्शित करते हैं कि प्रशिक्षित पशु भी मनोरंजन में सम्मिलित किये जाते होंगे। जैसा कि आज भी सिन्धुघाटी, विशेषतः मोहनजोदड़ो क्षेत्र में बैलगाड़ी की दौड़ करायी जाती है तथा इनमें धन व भूमि के दांव लगाये जाते हैं।[37] सभी सैंधव स्थलों से अत्यधिक संख्या में मिले पहिये व मिट्टी के बने खिलौना गाड़ी से यह स्पष्ट है कि यह खिलौना गाड़ियाँ मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन थीं।

मोहनजोदड़ो के विभिन्न भागों से अत्यधिक संख्या में खिलौना गाड़ियों के पहिये व अन्य खिलौनों में प्रयुक्त होने वाले मिट्टी के पहिये प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ो के DK 319 से 2.5 इंच व्यास व 0.7 इंच मोटाई के चार पहिये प्राप्त हुए हैं। इन पहियों में एक ओर का धुरा उठा हुआ है। किश से प्राप्त (सुमेरियन) मिट्टी के रथ के पहिये, व मोहनजोदड़ो के पहियों में मात्र धुरी का ही अन्तर है। सुमेरियन पहिये के दोनों ओर उठी हुई धूरी थी, जबकि मोहनजोदड़ो के पहियों में मात्र एक ही ओर की धुरी उठी हुई है। सुमेरियन पहियों के निर्माण में लकड़ी के एक से अधिक प्रयुक्त किये जाते थे, वैसी ही समानता वाले सैंधव सभ्यता में भी पहियों का निर्माण लकड़ी के एक से अधिक टुकड़ों से किये जाने का अनुमान लगाया जा सकता है ।[38] उत्खनन में खिलौना गाड़ियों के कई ढाँचे भी मिले हैं, जो वास्तविक रूप से परिवहन हेतु लोगों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाली लकड़ी व टेराकोटा की बैल गाड़ियों के प्रतिरूप हैं। आज भी भारत व पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में इस प्रकार की गाड़ियाँ देखी जा सकती हैं।[39]

हड़प्पा से कांस्य निर्मित 'इक्का' के समान छोटा आकर्षक प्रतिरूप मिला है, जिसकी ऊँचाई मात्र 2 इंच है तथा इसके पहिये अप्राप्त हैं। यह चालक के बैठने के स्थान व पीछे की तरफ खाली है, किन्तु किनारों पर ढँकी हुई है। इसी के समान एक अन्य मिट्टी निर्मित गाड़ी है।[40] चन्दूदड़ों से भी दो खिलौना गाड़ियाँ मिली हैं, एक हड़प्पा में प्राप्त उपरोक्त गाड़ी के समान

है, जबकि दूसरी बिना ढँकी हुई गाड़ी पहियों के साथ मिली है।[41] हड़प्पा की ही एक अन्य खिलौना गाड़ी की आकृति उल्टी काठी और दूसरी की नौका के समान है।

हड़प्पा व मोहनजोदड़ो से प्राप्त हल्के पीले रंग की मध्यम मिट्टी की खिलौना गाड़ी का एक फ्रेम मिला है, जिसका एक भाग अप्राप्त है। इसका प्रतिरूप तैयार करने पर यह 7.5 इंच लम्बा, 3.4 इंच चौड़ा व 0.62 इंच मोटा पाया गया है। गाड़ी का पूर्व से प्राप्त तैयार भाग हाथ से बनाया गया है, जो निश्चित रूप से किसी बच्चे द्वारा तैयार किया गया है। इस गाड़ी के पहियों में छेद था, जिनमें लकड़ी डालकर उसे चलाया जाता होगा।[42]उक्त गाड़ियों में छत या रस्सी का जाल (कैनोपी) लगाकर धूप से बचाव हेतु ढँका जाता होगा। मि0 वूले द्वारा उर से प्राप्त एक सेलखड़िया पत्थर के टुकड़े पर रथ का चित्र बना है, जिसे वूले ने 3200 ई0पू0 का बताया है।[43]

मनोरंजन के अन्य प्रचलित साधन – सैंधव सभ्यता के कई स्थलों से मिट्टी के बर्तन के टुकड़ों व मुद्राओं पर नाव का चिह्न मिलता है। सम्भव है कि यातायात के अलावा नौका विहार विषयक आमोद–प्रमोद के लिये भी इनका प्रयोग होता होगा। कई मुद्राओं पर मछली के चित्र बने हैं एवं मछली पकड़ने के काँटे तथा मछली की आकृति के कई टुकड़े मिले हैं[44] जिनसे यह स्पष्ट करता है कि मछली पकड़ना भी मनोरंजन का एक साधन रहा होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों हेतु, व्यक्तिगत – सामूहिक सभी प्रकार के विभिन्न मनोरंजन के साधन सैधव वासियों के दैनिक जीवन में प्रचलित थे

संदर्भ ग्रंथ

1 व्हीलर , सर मॉर्टीमर. द इंडस सिविलाईजेषन. कैम्ब्रिज एट द यूनीवर्सिटी प्रेस. थर्ड एडीषन,1968. पृ0 90
2. वही, पृ.90
3. वही, पृ0 90
4. अग्रवाल, वासुदेवशरण.हिन्दू सभ्यता.राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0,दिल्ली.पंचम संस्करण, 1975. पृ0 38
5. मार्शल जॉन. मोहनजोदड़ो एंड द इण्डस सिविलाईजेषन. आर्थर प्रॉबस्थैन लंदन.1931 , पृ0 551;
व्हीलर , सर मॉर्टीमर. पृ0 92
6. थपल्याल,किरण कुमार और शुक्ल, संकटा प्रसाद. सिन्धु सभा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ,पंचम संस्करण 2003. पृ0 197.
7. मार्शल जॉन. पृ0 551
व्हीलर , सर मॉर्टीमर. पृ0 92
8. व्हीलर , पृ0 92
9. थपलयाल, किरण कुमार, पृ0 198
10. मार्शल जॉन. पृ0 551
11. वही
12. थपल्याल, किरण कुमार, पृ0 198, मार्शल, जॉन, पृ0 552
13. मार्शल जॉन. पृ0 552
14. वही
15. वही
16. वही,
17. वही, पृ0 549
18. मैके,अर्नेस्ट.द इण्डस सिविलाईज़ेशन.इण्डोलॉजिकल बुक कॉरपोरेषन,नई दिल्ली.1936 पृ0135
19. मार्शल, पृ0 549
20. वही, पृ0 549
21. वही, पृ0 550

22.. वही, पृ0 550
23. वही, पृ0 551
24. मॉर्टिमर व्हीलर, पृ0 92
25. थपल्याल, पृ0 197
26. मार्शल वही, पृ0 560
27. मॉर्टिमर व्हीलर, पृ0 93
28. मार्शल वही, पृ0 552
29. वही, पृ0 552
30. मार्शल, पृ0 558
31. थपल्याल, पृ0 199
32. मार्शल, पृ0 559
33. मार्शल, पृ0 559
34. मार्शल, पृ0 559. थपल्याल, पृ0 199
35. मार्शल, पृ0 559
36. शास्त्री,केदारनाथ .सिंधु सभ्यता का आदि केन्द्र हड़प्पा. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1959
37. कैनोयर, जोनाथन मार्क.एनषीएण्ट सिटीज ऑफ द इण्डस वैली सिविलाईज़ेशन.ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस लंदन.1998 पृ0 130
38. मार्शल, पृ0 559
39. चावला सुरूचिका,पटेल अम्बिका. टेराकोटा टॉय आर्टफैक्ट ऑफ हड़प्पा कल्चर : अ मीडियम ऑफ लर्निंग फॉर चिल्ड्रन. जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी स्टडीज इन ऑर्कियोलॉजी 5 (2017):331–342 पृ0 334
40. मार्शल जॉन, पृ0 555
व्हीलर , पृ0 92
41. व्हीलर , पृ0 92
42. मार्शल, पृ0 554
43. वही, पृ0 555
44. मार्शल, पृ0557